❑उपन्यास अंस

कनक-सुंदर

शिवचन्द्र भरतिया

उपन्यासकार परिचै

शिवचंद्र भरतिया रौ जलम वि. सं. 1910 में होयौ। भरतिया संस्कृत, हिंदी, मराठी अर राजस्थानी रा विद्वान हा। शिवचंद्र भरतिया घणी विधावां रा रचनाकार हा। आप आधुनिक राजस्थानी गद्य लिखणियां में पैलड़ा उपन्यासकार मानीजै। केई विद्वान आपरै 'कनक-सुंदर' उपन्यास नैं राजस्थानी रौ पैलौ उपन्यास मानै। औ उपन्यास आप सन् 1903 में लिख्यौ। आप 'केसर विलास', 'फाटका जंजाळ', 'बुढापा की सगाई' (लघु नाटक), संगीत मानकुंवर आद केई नाटक लिख्या। 'मोत्यां की कंठी' आपरी पद्य-रचना है। आपरौ लेखन कथ्य अर सिल्प दोनूं दीठ सूं राजस्थानी गद्य नैं सबळौ बणायौ। आपरै लेखन रा खास सुर है— देस री आजादी रौ चाव, जूनी संस्कृति नैं आधुनिक संस्कृति में वैग्यानिक रूप सूं ढाळणौ अर समाज-सुधार।

पाठ परिचै

'कनक-सुंदर' उपन्यास रो मूळ धेय है— समाज-सुधार। औ उपन्यास आदर्शवादी दीठ सूं रचीज्यौ है। उपन्यास सूं साच, मैणत अर ईमानदारी जैड़ा सफळता रा सूत्रां री आ सीख मिळै। मुरलीधर मैणत अर सचाई सूं राज अर समाज में घणा मानीता अर धनवान होय जावै। वांरौ ब्यांव भाई-भाभी करावै। वांरै लड़कौ होवै, उणरौ नांव कनक कढाईजै। उणरै सागै सुंदर पढै। दोनूं रौ ब्यांव होय जावै। आगै रौ हाल दूजै भाग में। दूजौ सायद लिखीज्यौ ई कोनी। इण में राजस्थानी जीवण रौ फूठरौ चित्रण होयौ है। उण समै री केई सामाजिक बुरायां अर समस्यावां भी प्रकास में आवै। उपन्यास माथै नाटक सैली रौ प्रभाव दीखै। उपन्यास घटणा अर वरणन प्रधान है। साफ अर सरल अभिव्यक्ति आपरी भासा-सैली में सगळै प्रगटै।

'कनक-सुंदर' रौ अेक भाग ई साम्हीं आयौ, वौ भी मिळणौ दुरलभ है।

कनक-सुंदर

(1)

दोपहर दिन को बखत, च्यारां कानी लू चाल रही छै, हवा का जोर सूं बाळू अठी की उठीनै उड-उड कर बीं का नवा-नवा टीबा हो रह्या छै। ओर भींजण भी रह्या छै, मुंह ऊंचो कर सामनै चालणो मुस्कल छै, लू कपड़ा मांहै बड कर सारा सरीर नैं सिकताव कर रही छै। धूप इसी जोर की पड़ रही छै के जमीं ऊपर पग देणो मुस्कल छै। रस्ता मांहै दूर-दूर कठै ही झाड़ को नांव नहीं, बाळू उडकर जगां-जगां नवा टीबा होणै सूं रस्ता को ठिकाणौ नहीं, आदमी तौ दूर, रास्ता मांहै कोई जीव-जिनावर का भी दरसण नहीं, इसी बखत, अेक जवान आदमी, जिणकी उमर सोळा-सतरा बरस की थी, माथौ कपड़ा सूं बंध्यौ हुवौ, पीठ पर सामान की पोटळी लाद्यां हुवौ, हाथ मांहै लोटौ-

डोर लटकायौ हुवौ, हुस-हुस करतौ अजमेर कानी चल्यो आरह्यौ छै, रैती गरम होणै सूं पगां के चरका लागकर फोड़ा आ रह्या छै। तौ भी जोर सूं चाल रह्यौ छै। मन मांहे बार-बार बोल रह्यौ छै, कै ''भाभी! साबास तनैं! मनैं थाळी पर सूं जीमता नै उठाकर घर छुड़ायौ! कांई हरकत छै? रामजी म्हां का भी दिन कदै ही लासी जरां आप ही म्हांकै पगां पड़ता फिरसौ! भाई तौ भाई छै! म्हैं तौ जाणतौ थो कै म्हारै लार कोई दौड़सी पण मा बिना कीं नैं पीड़ आवै? आज मां होती तो म्हैं घर बारै नीसरतौ कांई? इण तरह रा विचार करतौ हुवौ अजमेर की टेसण ऊपर दाखल हुयौ।

खंडवा तरफ की गाडी जावा नै हाल पांच-छै घंटां की देर थी। पीठ पर को बोझौ उतारनै नीचै राख्यौ। पाणी बिना मुंह सूक रह्यौ थो सू बिरामण कनै सूं लोटौ भर जळ लेकर, खूब मूंडौ धोकर, थोड़ौ जळ पियौ, जरां कुछ होस आयौ। उता मांहै अेक जणौ आकर इण मुसाफर को हाथ पकड़ कर बोल्यौ— जय गोपाळजी की भाई साहब! कठीनै की तैयारी छै? क्यूं इण तरहै कांई?'' बिना मिल्यां ही परभारा टेसण पर आया? साबास! इण तरहै चाहिजै।

—कुण भाई वंसीलाल जी? भला बखत ऊपर मिल्या! परभारा कांई। म्हांको बखत ही अबार इण तरहै को छै। घर मांहै सूं काढ दीनौ जरा थे तौ खाली दोस्त छौ, थांसूं मिलकर कांई होणौ छै? इण तरहै मुसाफर उदासी सूं बोल्यौ।

वंसी.— वाह साब वाह! दुनिया मांहै दोस्त कै बराबर और कोई होतो होसी? मां-बाप सूं भी दोस्त ज्यादा काम आया करै छै। और साचा दोस्त की परीक्षा विपत पड़यांज हुवा करै छै, समझ्या मुरलीधरजी?

मुरली.— हां भाई! म्हैं तौ गरीब आदमी छूं। म्हैं कांई इसौ दोस्त कै लायक छूं सूं मनै कोई काम आवै? दुनिया मांहै पैसौ बडी चीज छै। पैसा वाळा का हजार दोस्त-सगासोई ओर भाईबंध छै।

वंसी.— अब आ पोटली-वींटली लेकर कठीनै? परदेस जाणै को विचार दीखै छै? ठीक! पण आज कै दिन तौ म्हांकै अठै चालौ, काल की गाडी मांहै रवाना हो जायीजौ।

मुरली.— नहीं भाई! अब मनैं दोस्ती का फांसा मांहै मती नाखौ, अब मनैं जाबा दौ। श्रीजी की कृपा सूं अणचींत्यौ मिळाप भी होयग्यौ। फेर आपकै अठै चालकर कांई करणौ छै?

इण तरै मुरलीधर जी तिरस्कार-युक्त बोल्या खरा, पण मित्रता की मूर्ति सामनै खड़ी रहकर उणका हृदय कंपित करबा लागी। जाणै वंसीलालजी नै छोड़बा को दिल होवै नहीं और उणकै साथ उणकै अठै जाणै को भी दिल होवै नहीं। खूब धूप मांहै घबराता-घबराता जोर सूं पांव उठाकर, जाणै गाडी की टैम मिलसी कै नहीं? तिकासूं दौड़ता-दौड़ता आया और जाणै की तैयारी पक्की हो गई। कठै ही दिल रुकबा नै जबा रही नहीं, इतना मांहै वंसीलालजी को मिळाप हो गयौ और मन दुवध्या मांहै पड़ग्यौ।

वंसीलालजी पूरौ आग्रह करनै आपका मित्र मुरलीधरजी नैं घरा ले गया। बिचारा मुरलीधरजी धूप की तीव्रता सूं, चित्त की व्याकुलता सूं और क्षुधा की आतुरता सूं घणा श्रमी हो गया था, जमीं पर पग धरकर उठावणौ मुस्कल थो, तो भी प्रेम की रस्सी सूं खींचीजता हुवा वंसीलालजी कै अठै पूगा। घरां जातां पाण वंसीलालजी मुरलीधरजी को घणा प्रेम सूं आदर-सत्कार कीनौ। अर रसोई तैयार करायनै जिमाया। साम का दोन्यूं मिलकर हकीकत पूछी। सुणकर अचंबै रह्या। रात का रसोई जीम सुख-दुख की वातां करनै आराम कीनौ।

(2)

खंडवा की रचना ठीक छै। मोटौ स्हैर भी नहीं और छोटौ गांवड़ौ भी नहीं। टेसण को गांव होणै सूं रात-दिन लोगां को आणौ-जाणौ बण्यौ रहतौ। बैपार लंबौ-सो थो नहीं तौ भी मेहनत मजूरी वाळा नैं निभाव की जगा थी। मुरलीधरजी उठै अेक छोटी-सी कोटड़ी भाड़ा सूं लेकर रहबा लाग्या। चारयां कांनी फिरकर गांव देख्यौ। फेरी सूं कपड़ौ बेचबा को इरादौ कीनौ, किरकोल कपड़ौ, छींटां का टुकड़ा वगैरा दस-पंदरा रुपिया का घणी जांच करनै फायदा सूं लीना और फेरी देणी सरू कीनी। विचार कीनौ कै कपड़ा ऊपर थोड़ौ नफौ रखकर गिरायक नैं अेकज भाव

बोलणौ, माल बिकौ अथवा मत बिकौ, पहलै दिन सारा गांव मांहै फेरी दीनी, पण अेक भाव बोलणै सूं कुछ बिकरी हुयी नहीं। मुरलीधरजी दिल का पक्का और हीमत का पूरा। अेक निस्चय कर लीनौ कै झूठ तौ बोलणौ ज नहीं, क्यूं भी हो सचावट राखणी, देखां भला कांई परिणाम होवै? दो-तीन दिन इण तरहै ही गया। फेर थोड़ौ-थोड़ौ कपड़ौ बिकवा लाग्यौ। लोगां नैं मालम हो गयी कै बाण्यौ अेक बात बोलै छै, फेर उण मांहे कमी-ज्यादा करै नहीं। महिना-पंदरा दिनां पीछै बिकरी आछी होवा लाग गयी। ऊपर को ऊपर माल बेचकर जका को कपड़ौ लाता बींनै पैसा चुका देता। इण तरहै थोड़ा दिनां मांहै तीन-चार सौ की पूंजी हो गयी।

सांच नै आंच नहीं— सचावट दुनिया मांहै मोटी चीज छै। सच्चा आदमी पर सारां को विस्वास बैठ जावै। विस्वास बैठ्यां पीछै कोई बात की कमती नहीं, साच नैं कठै भी डर नहीं, धोकौ नहीं और खराबौ नहीं, सांच ऊपर सूर्य, चंद्र, तारा, प्रथ्वी चाल रह्या छै। सांच ऊपर राज्य को पायौ छै। सांच ऊपर वौपार की इमारत छै। सांच की लछमी बंधी हुई छै। जिण आदमी के पास सांच छै, उणकै सामनै अस्टसिद्धि-नवनिधि हाथ जोड़कर खड़्या छै। सांच के वसीभूत प्रत्यक्ष नारायण छै, सांच बिना सोभा नहीं, आबरू नहीं, धन नहीं, मान नहीं, कुछ भी नहीं, किसी भी विपत पड़ौ, किसौ परसंग आवौ, सांच नैं छोडणौ नहीं। राजा हरिसचंद्र सांच के वास्तै राज गमायौ, लुगाई-बेटा नैं गमाया, आप बिकग्यौ, नाना प्रकार का संकट भोग्या, पण सांच छोडी नहीं! नळ राजा महा संकट भोग्यौ पण सांच छोडी नहीं। पांडवां राज गमायौ, वनवास भोग्यौ, पण सांच छोडी नहीं। इण तरहै ही म्हांका मुरलीधरजी सांच ऊपर कमर बांधकर सांच को पूरौ-पूरौ आश्रय लीनौ।

इण सचावट सूं खंडवा मांहै सारा ही मुरलीधरजी की सोभा करवा लाग गया। उण पर सारां को पूरौ-पूरौ विस्वास बैठ गयौ। अब कपड़ां कै तांई बराणपुर, भुसावल, जळगांव तोड़ी जावा लाग गया। हजारां रुपियां को माल उधार मिलबा लाग गयौ। दुकान पर हर कपड़ा का थान ऊपर कीमत की चट्टियां मार दीनी। अेक फरदी करनै बार सूं हर भाव का थान, नामूद कर दीना, इण तरहै की साख बंधी कै भाव बोलणै की कींनै जरूरत रही नहीं। कोई भी गिरायक साबत थान लेवै तौ थान पर रुपिया मंड्योड़ा देख कर बिना बोल्यां देय जावै। और किरकोल वाळा फरदी मांहै भाव देखकर दाम देय जावै। डेढ दो बरस मांहै मुरलीधरजी आठ-दस हजार का मालक बण गया।

'उत्तम खेती, मध्यम वौपार, कनिस्ट चाकरी और भीख निदान' कहावत छै। खेती ऊपर तौ आपणौ सारौ ही देस छै। वौपार मध्यम कह्यौ छै, पण पारासर ऋसि को कहणौ छै कै वौपार मांहै लक्ष्मी पूरी, बीं सूं आधी खेती मांहै, बीं सूं आधी राजा री नौकरी मांहै और भीख मांहै तौ कुछ भी नहीं, इसी वास्तै वौपार सारा सूं घणौ ऊंचौ अर श्रेस्ठ छै, बीं को पार नहीं, अंग्रेज लोगां इत्ती बडी सत्ता और वैभव वौपार का कारण सूंज संपादन कीना छै। वौपार को मुख्य पायौ तथा आधार साच, उद्योग और नियमितपणा पर छै। टापटीप, व्यवस्थितपणौ, अेक बात, बखत की बखत भुगतावण, मीठी बात, नरमाई और गिरायक को आदर-सत्कार अै वौपार का अंग छै, अंग्रेज लोग मिट्टी को सोनौ कर रह्या छै। बै लोग कोई काम मांहै फस भी जावै तौ बींकौ पीछौ छोड कर निरास होकर बैठै नहीं, पूरौ पीसौ लेकर बीं काम नैं सेवट लेय जावै। आज सारौ दुनिया भर को वौपार उण लोगां कै हाथ मांहै छै।

(3)

अेक दिन इठै का बडा साहब कानी सूं कपड़ौ-लत्तौ और किरकोल माल की फैरिस्त आयी तिकी मुरलीधरजी आपका भाई नैं दीनी और कह्यौ कै फैरिस्त मुजब सारौ माल आपणा आदमी कै साथ देकर, माल की कीमत बराबर लगाकर, बीजक साथ देकर, भेज दियो। तिका परवाणै हजारीमलजी सारौ माल निकाळ कर गुमास्ता कनै सूं बीजक लिखवाय नै भेज दीनौ। साम का मुरलीधरजी जमा-खरच देखबा लाग्या। साहेब का नांव सूं माल नोंध्योड़ौ देख्यौ। सारा माल की कीमत बराबर थी, परंतु काळी बनात को थान, जका की कीमत खरच नफा सूधा नौ रुपिया वार की थी सूं हजारीमलजी जाण-बूझकर बारा रुपिया वार को भाव लगा दीनो थो। मुरलीधरजी देखकर चोंक उठ्या। और भाई नैं बोल्या कै औ कांई कीनौ? नौ कै ठिकाणै बारा कियांन लगाया? आ बात आछी कीनी नहीं, बात नैं बट्टौ लगायौ।

हजारीमलजी सुणकर बोल्या कै कांई हुवौ? चार-पांच सौ को माल गयौ जका मांहै अेक बनात का दाम ज्यादा लगाया तौ कांई हरकत छै? साहब लोगां को काम, बै किसा देखै छै?

मुरली.— (दोरा होकर) बै किसा देखै छै! नहीं-नहीं! नारायण तौ देखै छै ना? आदमी सूं तौ चोरी कर लेवां, पण श्रीजी कै आगै चोरी हो सकै कांई? और इसी चोरी सूं फायदौ भी कांई?

लाभ न होवै कपट सौं, जो कीजै व्योपार।
जैसे हांडी काठ की, चढै न दूजी बार।।

ओ काम आछौ नहीं हुवौ, आज तांई म्हारौ नेम पूरौ निभ्यौ, पण आज बीं को भंग हुवौ, मरजी नारायण की!

हजारी.— (नीचै झांककर) भाया! इण मांहै दोरौ होबा को काम कांई छै? साहब नैं चिट्ठी लिखकर भूल सूं ज्यादा कीमत लगी सूं दाम करा ल्यौ। साहब तौ उल्टौ खुसी होसी, आगै इण मांहै कोई आछी बात होगी छै। जरां औ इसौ काम हुवौ छै, भूलचूक को कांई? भूलचूक तौ सदा लेणी-देणी छै।

मुरली.— (विचार मांहै) ठीक छै, आज तांई श्रीजी इण तरहै की म्हारा हाथ सूं भूल करायी नहीं, आज बडेरां का हाथ सूं हुयौ छै, सूं बोही नारायण सुधारसी।

इण तरहै बोलकर मुरलीधरजी झट अेक अंग्रेजी लिखबा वाळा नैं बुलाकर घणी नम्रता सूं अेक चिट्ठी साहब कै नाम लिखाकर भेजी कै म्हांका भाई की भूल सूं काळी बनात नौ रुपिया वार थी सूं बारा को भाव लगायौ गयौ छै, सूं बीजक दुरस्त करनै उत्ता रुपिया भेज दीजौ।

साहब कै पास माल पूग गयौ थो। दो-चार साहब और भी था। उणां की मेम साहब भी थी। माल सारां कै पसंद आयौ। कीमत भी ठीक नजर आयी। काळी बनात देख रह्या था। आपकै पास की बनात इण बनात सूं मिलायी, अेक बणाणै वाळौ, अेक कारखानौ, अेक नंबर, अेक रंग और अेक कपड़ौ, मेमसाहब नैं भाव पूछ्यौ तौ बोल्या कै तैरा का भाव की ममोई सूं आयी छै, जरां साहब नैं बडो अचरज आयौ कै जो चीज ममोई मांहै तैरा का भाव की बिकै सूं अठै बारा का भाव की कियांन मिलसी? इण तरहै सारौ ही माल किफायत वार छै। जाण-बूझकर बाण्यौ कठै कीमत तौ कमी लगायी नहीं छे? आजू-बाजू का सारा ही लोग बोलबा लाग्या कै साहब! नहीं बाण्यौ घणौज ईमानदार आदमी छै। आप मोटा साहब छौ तौ भी बौ ही भाव और कोई गरीब जासी तौ भी बौ ही भाव, कमती-ज्यादा को हिसाब बींकै पास छै नहीं। कीं सूं पाई ई अेक को फरक नहीं। देसी लोगां मांहै इसौ वौपारी दूजौ कोई देखण मांहै छै नहीं। इण तरहै वातां हो रही छै।

इत्ता मांहै मुरलीधरजी की चिट्ठी लेकर उणको आदमी आयौ। साहब नैं चिट्ठी दीनी, साहब चिट्ठी बांचकर अचंबै रह्या। और समझ्या कै मनैं खुसी करबा की बाण्या की आ चालाकी दीखै छै, इण मांहै कोई सक नहीं, फेर आपका सईस नैं बुलाकर बोल्या कै तूं अै नौ रुपिया थारै पास रख, और मुरलीधर सेठ की दुकान ऊपर जाकर ऊंची सूं ऊंची काळी बनात अेक बार मांग, वार का नौ रुपिया मांगै तौ देकर लेय आ, ज्यादा दाम बोलै तौ पीछै आकर कमी रैवै सू रुपिया लेय जाकर फेर लेय आ, तूं म्हारौ सईस छै जिकौ पतौ दीजै मती, पूछै तौ महू-को छावणी को छूं करनै बोलजै।

सईस झट मुरलीधरजी की दुकान पर जाकर ऊंची सूं ऊंची काळी बनात मांगी। वार भरका दाम वै ही नौ रुपिया मांग्या। बनात फाड़ दी और रुपिया नौ लेय लीना। बनात को टुकड़ौ लेकर सईस साहब कै पास आयौ। साहब पहली की बनात सूं मिला लीनी, उणकी खातरी हो गयी, घर मांहै सूं सरकारी बार मंगा कर नापी। बराबर भरी, साहब झट आपकी डायरी मांहै मुरलीधरजी को नांव नोंध लीनौ, और लिख रख्यौ कै 'रायबहादुर' की खिताब देणै माफक औ बाण्यौ छै। फेर कित्ती ही वार इण कै अठै सूं माल मंगायौ पण पाई को फरक पड़्यौ नहीं। सरकारी कामकाज मांहै भी मुरलीधरजी नैं बुलाया, परंतु सारी बात सूं उणकी सचावट पायी गयी और सारां लोगां का मूं सूं

इण नर की बार-बार जठै-उठै सोभा ही सुणी, साहब की बाल-बाल खातरी हो गयी। और 'रायबहादुर' की खिताब देणै कै वास्तै सरकार मांहै मुरलीधरजी की सिफारिस कर दीनी।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

छै=है। भींजण=बिखरणौ। चरका=बाळू पर पग बळणा। फोड़ा=फफोला, घाव। जरां=तद, तब। सगासोई=सगा-संबंधी। फांसा=फंदा। श्रमी=थाकग्या। फेरी=घूम-घूमनै कोई चीज बेचणी। परसंग=स्थिति, अवसर। तोड़ी=तक। फरदी=सूची, फेहरिस्त। नामूद=प्रगट। किरकोल=खुदरा। संपादन=आछी हासल, प्राप्ति। ठिकाणै=ठौड़ माथै, स्थान पर। बाण्यौ=बाणियौ, वौपारी। वाद भरका=गज रौ नाप। खातरी=आव-आदर, मान-मनवार।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''भाभी! साबास तनैं। मनैं थाळी पर सूं जीमता नै उठाकर घर छुडायौ।''
   इण वाक्य में किसौ भाव छिप्यौ है?
   (अ) तारीफ रौ (ब) निरासा रौ
   (स) खीज रौ (द) अभिमान रौ

( )

2. ''जमीं पर पग धरकर उठावणौ मुस्कल थो।''
   मुरलीधरजी रौ जमीं पर पग धरकर उठावणौ क्यूं मुस्कल हौ?
   (अ) वंसीलालजी रै तिरस्कार रै कारण (ब) भाभी रै वैवार रै कारण
   (स) चित्त री व्याकुलता अर क्षुधा री आकुलता रै कारण (द) अणचींत्यौ मिळाप होवण सूं

( )

3. ''साहब चिट्ठी बांचकर अचंबै रह्या।''
   साहब चिट्ठी बांचनै अचंभै क्यूं रह्या?
   (अ) चिट्ठी में बनात रा भाव बारै रुपिया री जगां नौ रुपिया लगाया हा
   (ब) चिट्ठी में बाण्या री चालाकी दीखै ही
   (स) चिट्ठी में बीजक रा भाव बधायनै लिख्योड़ा हा
   (द) चिट्ठी में बिल रा रुपिया जल्दी भेजण रौ लिख्यौ हौ

( )

4. ''रायबहादुर की खिताब देणै माफक औ बाण्यौ छै।''
   साहब मुरलीधरजी नैं खिताब देवणै री क्यूं सोची?
   (अ) आछै व्यौहार खातर (ब) ईमानदारी खातर
   (स) प्रसिद्धि रै कारण (द) लाभ पुगावण रै कारण

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''हुस-हुस करतौ अजमेर कानी चल्यौ आ रह्यौ आदमी किण दसा में आय रह्यौ छै।'' इणरौ वरणन करौ।
2. ''साचा दोस्त की परीक्षा विपत पड़्यां ई हुया करै छै।'' आ बात कुण, किणनैं अर कद कही।
3. खंडवा मांहै मुरलीधरजी की साख आछी क्यूं बणगी?
4. मुरलीधरजी साहब कै नाम चिट्ठी क्यूं लिखवाई?
5. मुरलीधरजी बाबत लोगां मांहै कांई बातां हो रही छै?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. साहब नैं मुरलीधरजी रै सांच री खातरी कियां हुई?
2. पाठ रै आधार माथै गरमी री दोपहर रौ वरणन करौ।
3. 'कनक-सुंदर' उपन्यास रै मुजब खंडवा री रचना बाबत चार ओळ्यां लिखौ।
4. 'सांच नैं आंच नहीं' सांच री महिमा नैं बतावतां पांच ओळ्यां लिखौ।
5. वौपार रा अंग कांई-कांई छै?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'कनक-सुंदर' उपन्यास रै नायक रौ चरित्त उकेरौ।
2. 'ईमानदार व्यौहार सफळता रौ द्वार', सिद्ध करौ।
3. नीचै लिखी ओळ्यां रै भावां रौ खुलासौ करौ—
   (1) आज मां होती तौ म्हैं घर बारै नीसरतौ कांई?
   (2) अेक बनात का दाम ज्यादा लगाया तौ कांई हरकत छै?
   (3) आज तांई म्हारौ नेम पूरौ निभ्यौ, पण आज बींको भंग हुवौ, मरजी नारायण की!
4. नीचै लिख्योड़ा मुहावरां रौ अरथ लिखौ अर इणां सूं अेक-अेक वाक्य बणावौ—
   (1) मुंह ऊंचौ करनै चालणौ।
   (2) पग देणौ मुस्कल होवणौ।
   (3) पगां पड़तां फिरणौ।
   (4) फांसा मांहै नाखणौ।
   (5) सोभा करणौ।
   (6) अचंबै रहणौ।
   (7) खातरी होवणौ।